शहीदी शताब्दी पुस्तक
प्रकाशना श्रृंखला-6

श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी के प्रमुख विषय

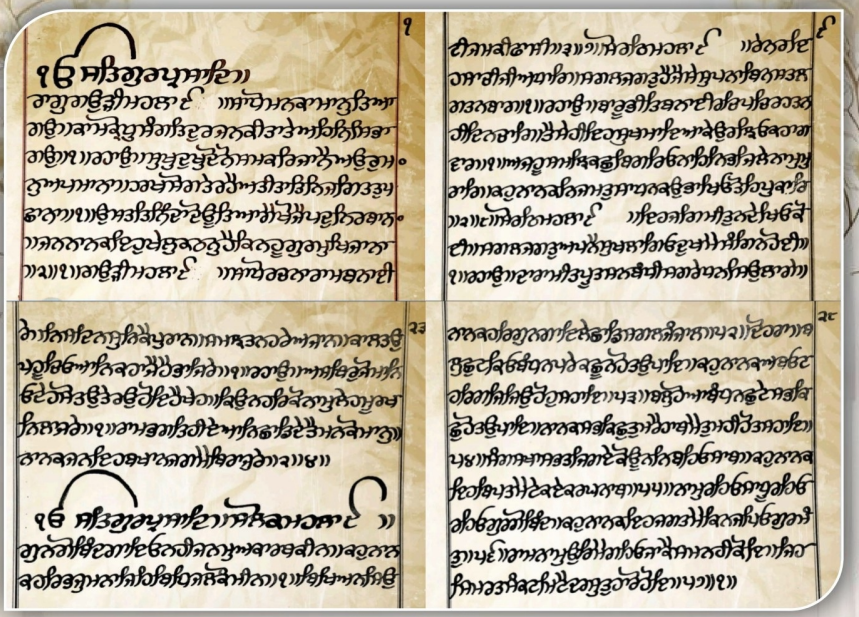

डॉ. संदीप सिंह

पब्लिकेशन एवं खोज विभाग,
हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमैंट कमेटी,
कुरुक्षेत्र

भेटा रहित

©
Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra

SRI GURU TEG BAHADAR JI
KI BANI KE PARMUKH VISHYE
(Hindi)

Writer:
Dr. Sandeep Singh
In-charge
Department of Publication & Research,
Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra

Research Associate:
Bhai Gurdas Singh

Typing Work:
Satnam Singh

First Edition November 2025
4,000

Printer: Tejas Printers, Patiala

Published by Department of Publication & Research,
Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra

प्रवेशिका

श्री गुरु तेग बहादर जी की पावन दिव्य बाणी, मानवता के लिए एक सदैवकालीन मार्गदर्शन का कार्य कर रही है, जो विषय-विकारों की तपिश में भटक रही मानवता को रूहानी शीतलता प्रदान करती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज गुरु साहिब जी के पावन 59 शबद और 57 श्लोक, पदार्थक रूचियों में डूबे मनुष्य को इन पदार्थों की वास्तविकता दिखाकर, परमार्थ के मार्ग की ओर अग्रसर करते हैं। गुरु जी की संपूर्ण बाणी, अकाल पुरख और उनके नाम की महिमा को रूपमान करती हुई मनुष्य को नाम स्मरण से जुड़ने की प्रेरणा प्रदान करती है।

हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमैंट कमेटी के 'पब्लिकेशन एवं खोज विभाग' द्वारा श्री गुरु तेग बहादर जी के 350वें शहीदी दिवस के ऐतिहासिक अवसर पर उनकी बाणी से संबंधित ट्रैक्ट (पुस्तिका) प्रकाशित करके गुरु साहिब को श्रद्धा-सुमन अर्पित किए जा रहे हैं। ट्रैक्ट के लेखक डॉ. संदीप सिंह इस कार्य के माध्यम से गुरु साहिब की कृपा के पात्र बने हैं। आशा है कि संगत इससे लाभ प्राप्त करेगी और यह कार्य गुरु साहिब की बाणी को समझने में सहायता प्रदान करेगा।

जथेदार जगदीश सिंह झींडा

प्रधान,

हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमैंट कमेटी,

कुरुक्षेत्र।

श्री गुरु नानक देव जी की आध्यात्मिक गद्दी के नौवें रहबर 'श्री गुरु तेग बहादर जी' बहुपक्षीय व्यक्तित्व के मालिक थे, जिन्हें धार्मिक रहनुमा, शूरवीर योद्धा, परमात्मा के साथ एकरूप आध्यात्मिक शख्सियत, महान दार्शनिक, उच्च कोटि के साहित्यकार और अद्वितीय शहीद के रूप में याद किया जाता है। उन्होंने सिक्ख धर्म के नौवें गुरु के रूप में सिक्ख धर्म का नेतृत्व भी किया, 13 वर्ष की आयु में युद्ध के मैदान में अपनी तेग के जौहर भी दिखाए और दीन-दुखियों की पुकार सुनकर उनके लिए अपनी शहादत भी दी। गुरु पातशाह के आध्यात्मिक-दार्शनिक गुणों का प्रकटाव उनके जीवन-घटनाक्रम और उनकी पावण बाणी से सहज ही हो जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में उनके 15 रागों में 59 शब्द और 'सलोक वारां ते वधीक' के अंतर्गत 'सलोक महला ९' के शीर्षक के तहत 57 सलोक (श्लोक) दर्ज हैं। गुरु जी की समस्त बाणी का मुख्य विषय, मोह माया और विकारों में ग्रस्त मनुष्य को संसार और सांसारिक पदार्थों-रिश्तों की अस्थिरता की वास्तविकता दिखाकर अकाल पुरख (परमात्मा) के नाम से जोड़ना है। मुख्य रूप से गुरु साहिब जी की रचना ब्रज भाषा में है। उन्होंने मनुष्य को समझाने के लिए पौराणिक दृष्टांतों का भी उपयोग किया है और विभिन्न प्रतीकों व अलंकारों का भी सुंदर ढंग से प्रयोग किया है। श्री गुरु तेग बहादर जी की समस्त पावण बाणी आशावादी, प्रेरणादायी और विकारों के प्रभाव से मुक्त करके परमात्मा से जोड़ने वाली है। उनकी बाणी में वर्णित प्रमुख विषयों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है-

1. अकाल पुरख

श्री गुरु तेग बहादर जी ने अकाल पुरख को अनंत गुणों का आधार

मानते हुए उसे 'दीन बंधु', 'दुख भंजन', 'दीन दयाल', 'सब सुख दाता', 'पतित उद्धारण', 'सर्व निवासी', 'चिंतामणि' आदि पदों से संबोधित किया है। उनकी बाणी में अकाल पुरख के निम्नलिखित पहलुओं का प्रकटीकरण हुआ है:

1.1 स्वरूप और सामर्थ्य

परमात्मा की गति को सांसारिक ज्ञान से वर्णन करना असंभव है क्योंकि बड़े-बड़े धार्मिक कर्म करने वाले और विद्वान लोग इस संबंध में असफल प्रयास करते रहे हैं।[1] वह पल में ही राजा को रंक और रंक को राजा बना देता है, खाली को भर देता है और भरे को खाली कर देता है:

छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥
रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे ॥१॥ [2]

1.2 पापियों और मनमुखों (मन के पीछे चलने वाले) को क्षमा करने वाला

परमात्मा का स्वभाव पापियों को पवित्र करने वाला है। वह अनाथों का नाथ है और भय से मुक्ति देने वाला है।[3] संसार में पापी के रूप में पहचाने वाले अजामल और गणिका का परमात्मा की शरण में आने से पल भर में ही

---

[1] हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥
जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥१॥
-शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 537.

[2] वही, अंग 537.

[3] पतित उधारण भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥
कहु नानक तिह जानीअै सदा बसतु तुम साथि ॥६॥ -वही, अंग 1426.

उद्धार हो गया।[4] प्रभु की शरण में आने वाला मनमुखी स्वभाव वाला मनुष्य भी क्षमा का पात्र बन जाता है। जैतसरी राग के निम्न शब्द के माध्यम से गुरु साहिब जी ने उत्तम पुरख के रूप में मनमुखी स्वभाव वाले मनुष्य द्वारा परमात्मा का आश्रय लेने की प्रार्थना को व्यक्त किया है, जो ऐसे मनुष्य को अकाल पुरख की कृपा का पात्र बना देती है:

हरि जू राखि लेहु पति मेरी ॥
जम को त्रास भइओ उर अंतरि सरनि गही किरपा निधि तेरी ॥१॥
रहाउ ॥ महा पतित मुगध लोभी फुनि करत पाप अब हारा ॥
भै मरबे को बिसरत नाहिन तिह चिंता तनु जारा ॥१॥
कीए उपाव मुक्ति के कारनि दह दिसि कउ उठि धाइआ ॥
घट ही भीतरि बसै निरंजनु ता को मरमु न पाइआ ॥२॥
नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउनु करमु अब कीजै ॥
नानक हारि परिओ सरनागति अभै दानु प्रभ दीजै ॥३॥२॥[5]

1.3 सांसारिक सुखों का दाता और दुख: दूर करने वाला

अकाल पुरख को श्री गुरु तेग बहादर जी ने सभी सुखों का एकमात्र दाता कहा है[6] जिसके सामने सारा संसार भिखारी की तरह है।[7] परमात्मा

---

[4] मन रे प्रभ की सरनि विचारो ॥
जिह सिमरत गनका सी उधरी ता को जसु उर धारो ॥१॥ रहाउ ॥ ...अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निस्तारा ॥ नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा ॥३॥४॥
-शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 632.

[5] वही, अंग 703.

[6] सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइ ॥
कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥९॥ -वही, अंग 1426

मनुष्य को शरीर, धन-दौलत और सुंदर घर-बार जैसे सांसारिक सुख प्रदान करता है, फिर भी मनुष्य उसका स्मरण नहीं करता:

तनु धनु संपै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम ॥
कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न रामु ॥८॥ [8]

जब मनुष्य का प्रभाव खत्म होने के बाद वह शक्तिहीन हो जाता है और सभी किए गए उपाय असफल हो जाते हैं, तब परमात्मा ही मनुष्य की परेशानियों और दुखों को दूर करता है।[9]

1.4 अकाल पुरख का निवास और सर्वव्यापकता

मनुष्य अज्ञानता के कारण उस परम हस्ती को जंगलों में खोजता फिरता है, लेकिन सभी में निवास करने वाला परमात्मा मनुष्य के साथ ही उसके अंदर मौजूद है, जैसे फूल में सुगंध और शीशे में शीशा देखने वाले का प्रतिबिंब । गुरु के दिखाए इस मार्ग की मनुष्य को तब तक समझ नहीं आती, जब तक वह अपने आत्मिक जीवन को नहीं पहचान लेता ।[10] अकाल पुरख

---

[7] जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥
कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥४०॥ -वही, अंग 1426

[8] शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 1426

[9] बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥
कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥५३॥ -वही, अंग 1427

[10] काहे रे बन खोजन जाई ॥२॥१॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥१॥ रहाउ ॥
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥१॥
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुरु गिआनु बताई ॥
जन नानक बिनु आपा चीने मिटै न भ्रम की काई ॥२॥१॥ -वही, अंग 684

की सर्वव्यापकता का विचार, आत्मिक अवस्था को प्राप्त मनुष्यों (संतों) द्वारा प्रमाणित है कि परमात्मा सृष्टि के कण-कण में वास करता है:

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥१२॥ [11]

1.5 नाशवान सांसारिक रिश्तों के मुकाबले परमात्मा ही सच्चा साथी

श्री गुरु तेग बहादर जी ने सांसारिक रिश्तों की वास्तविकता को प्रस्तुत करते हुए यह विचार व्यक्त किया है कि यह सारा संसार अपने सुखों के कारण ही मनुष्य से जुड़ता है। सुख के समय में सभी सगे-संबंधी मनुष्य के साथ हर समय निकटता और अपनापन बनाए रखते हैं, लेकिन विपत्ति के समय इनमें से कोई भी पास नहीं आता। हमेशा साथ रहने वाली पत्नी भी अंत समय में मनुष्य को छोड़ देती है। ऐसे समय में परमात्मा के अलावा कोई भी मनुष्य के काम नहीं आता।[12] मनुष्य के कठिन समय में जब सगे-साथी, परिवार और रिश्तेदार उसका साथ छोड़ देते हैं, उस समय केवल अकाल पुरख का ही सहारा होता है:

---

[11] शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 1427.

[12] प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥
अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ को काहू को नाही ॥१॥ रहाउ ॥
सुख मै आनि बहुत मिलि बैठत रहत चहू दिसि घेरै ॥
बिपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ न आवत नेरै ॥१॥
घर की नारि बहुत हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी ॥
जब ही हंस तजी इह कांइया प्रेत प्रेत करि भागी ॥२॥
इह बिधि को ब्युहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ ॥
अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ॥३॥१३॥१३९॥ -वही, अंग 634

संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥
कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ॥५५॥ [13]

2. मनुष्य

गुरबाणी के अनुसार, मनुष्य इस धरती के सभी जीवों में से श्रेष्ठ है और सभी प्राणियों पर उसकी बादशाहत है।[14] देवताओं के लिए भी दुर्लभ यह मानव शरीर[15] जीव को विशेष प्रयासों के फलस्वरूप प्राप्त होता है[16] जिसका उद्देश्य परमात्मा से मिलन करना है।[17] लेकिन अज्ञानी मनुष्य माया के मोह में पड़कर इस 'दुर्लभ मानव देह' को व्यर्थ गंवा देता है।[18]

श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी में मनुष्य के दो रूप सामने आते हैं: माया के मोह से ऊपर उठकर परमात्मा से जुड़े हुए (गुरमुख) और माया के प्रभाव में भटकने वाले (मनमुख)। गुरु साहिब जी ने माया के अधीन भटक रहे मनुष्य को अपनी बाणी में बार-बार परमात्मा से जुड़ने का उपदेश दिया है ताकि अमूल्य मानव जन्म सफल हो सके। उनकी बाणी में मनुष्य के निम्नलिखित पहलु निरूपित होते हैं:

---

[13] शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 1429.

[14] अवर जोनि तेरी पनिहारी ॥
इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥ -वही, अंग 374.

[15] इस देही कउ सिमरहि देव ॥ -वही, अंग 1159.

[16] गुर सेवा ते भगति कमाई ॥
तब इह मानस देही पाई ॥ -वही, अंग 1159.

[17] भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ -वही, अंग 378.

[18] दुरलभ देह पाइ मानस की बिरथा जनमु सिरावै ॥ -वही, अंग 220.

2.1 मानव शरीर की अमूल्यता

मानव शरीर को गुरु साहिब जी ने अपने श्लोकों में 'दुर्लभ मानुख देह' का दर्जा दिया है। यह मानव शरीर ही परमात्मा से मिलाप का अवसर है क्योंकि यह शरीर अनेक जन्मों की भटकन के बाद प्राप्त होता है।[19] इसलिए मानव शरीर में परमात्मा का स्मरण करना चाहिए:

बहुत जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई ॥
मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ॥३॥२॥ [20]

2.2 मनुष्य की तीन अवस्थाएं

मानव जीवन की आयु के पड़ावों के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर जी ने तीन अवस्थाएं मानी हैं: बचपन, जवानी और बुढ़ापा । यदि परमात्मा का नाम-स्मरण न किया जाए तो ये सभी अवस्थाएं व्यर्थ चली जाती हैं।[21]

मनमुख मनुष्य का बचपन अज्ञानता में बीत जाता है, जवानी विषय-विकारों में और बुढ़ापे की अवस्था में भी मनुष्य खोटी बुद्धि के अधीन होकर सत्य को नहीं समझता:

तरनापो बिखियन सिउ खोइयो बालपनु अगियाना ॥
बिरधि भइओ अजहू नही समझै कौन कुमति उरझाना ॥१॥ [22]

---

[19] फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥२॥२॥
-शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 631.

[20] वही, अंग 632.

[21] बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥
कहु नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मानु ॥ -वही, अंग 1428.

2.3 मानव शरीर: पांच तत्वों की रचना

मनुष्य का शरीर पांच तत्वों की रचना है और अंत में उन पांच तत्वों में ही विलीन हो जाता है जिनसे यह बना है:

पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥
जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥११॥ [23]

2.4 मनमुख मनुष्यों की प्रवृत्ति

माया और विषय-विकारों में ग्रस्त मनमुख मनुष्यों की प्रवृत्ति को गुरु साहिब जी ने अपनी बाणी में कई स्थानों पर अनेक शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इस संबंध में व्यक्त होने वाले मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

(क) दिन-रात माया में मग्न रहते हैं और परमात्मा का स्मरण नहीं करते।[24]

(ख) मृग तृष्णा जैसे झूठे संसार के साथ मोह रखते हैं।[25]

(ग) लोभ के अधीन धन की आशा के कारण हर ओर भागते हैं, सुखों की प्राप्ति के लिए मनुष्यों का आश्रय लेकर दुखी होते हैं और दर-बदर कुत्तों की तरह भटकते हैं।[26]

---

[22] शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 902.

[23] वही, अंग 1427.

[24] प्राणी कउ हरि जसु मनि नही आवै ॥
अहिनिसि मगनु रहै माइआ मै कहु कैसे गुन गावै ॥१॥ रहाउ ॥ -वही, अंग 219.

[25] मृग तृष्ना जिउ झूठो इहु जग देखि तासि उठि धावै ॥१॥ -वही, अंग 219.

[26] बिरथा कहउ कऊन सिउ मन की ॥
लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की ॥१॥ रहाउ ॥
सुख कै हेत बहुत दुखु पावत सेव करत जन जन की ॥

(घ) माया के अहंकार में मस्त होकर परमात्मा को याद नहीं करते, चोरी-ठग्गी से संसार को लूटकर अपना पेट भरते हैं और कुत्ते की पूंछ की तरह कभी सीधे नहीं होते।[27]

(ङ) ऐसे व्यक्ति कभी भी साधुजनों की संगति नहीं करते और न ही प्रभु की कीर्ति गाते हैं।[28]

(च) माता-पिता, पुत्र, पत्नी आदि के रस में लिप्त रहकर यौवन और दौलत के अहंकार में दिन-रात मस्त रहते हैं।[29]

(छ) मन से कभी परमात्मा के गुण नहीं गाते, गुरु का उपदेश नहीं सुनते, पराई स्त्री और पराई निंदा में लिप्त रहते हैं और समझाने पर भी नहीं समझते।[30]

2.5 शारीरिक अंगों को सफल करने का ढंग

मनुष्य के शारीरिक अंग परमात्मा से जुड़कर ही सफल हो सकते हैं।

दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥१॥
-शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 411.

[27] मदि माइया कै भइओ बावरो हरि जसु नहि उचरै ॥
करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै ॥१॥
सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान धरै ॥ -वही, अंग 536.

[28] साधसंगु कबहू नहीं कीना नह कीरति प्रभ गाई ॥ -वही, अंग 632.

[29] मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि लपटाना ॥
जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना ॥१॥ -वही, अंग 684-85.

[30] मन करि कबहू न हरि गुन गाइयो ॥
बिखिआसकत रहिओ निसि बासुर कीनो अपनो भाइयो ॥१॥ रहाउ ॥
गुर उपदेसु सुनिओ नहि काननि पर दारा लपटाइयो ॥
पर निंदा कारनि बहु धावत समझिओ नह समझाइयो ॥१॥ -वही, अंग 1231-32.

मनुष्य को अपने कानों से परमात्मा के गुण सुनने चाहिए और जीभ द्वारा उसकी प्रशंसा के गीत गाने चाहिए:

रे मन राम सिउ करि प्रीत ॥
स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥१॥ रहाउ ॥ [31]

2.6 मानव जीवन की व्यर्थता के कारण

(क) मनुष्य लोभ के अधीन होकर वे कार्य नहीं करता जो उसके जीवन को सार्थक प्रेरणा प्रदान करते हैं।[32]

(ख) माया में लिप्त होकर मनुष्य परमात्मा के स्मरण की जगह सांसारिक कार्यों की इच्छा रखता है और दूसरों को ठगने की सोचता है, लेकिन मृत्यु की फांसी उसके गले में आ पड़ती है।[33]

(ग) सांसारिक सुखों की प्राप्ति के लिए मनुष्य बहुत प्रयास करता है, लेकिन आने वाले दुखों को रोकने के लिए कोई उपाय नहीं करता, परंतु होता वही है जो परमात्मा की इच्छा हो।[34]

2.7 मानव जीवन को सफल करने का ढंग[35]

---

[31] शब्दार्थ श्री ग्रंथ साहिब, अंग 631.

[32] करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभ कै फंध ॥
नानक समिओ रमि गइओ अब किउ रोवत अंध ॥३६॥ -वही, अंग 1428.

[33] नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥
चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥३८॥ -वही, अंग 1428.

[34] जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥
कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ ॥३९॥ -वही, अंग 1428.

[35] रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥

(क) परमात्मा के नाम का स्मरण करना क्योंकि यही मानव जीवन का असली कार्य है।

(ख) मोह-माया का साथ छोड़कर परमात्मा की शरण में आना।

(ग) संसार के सुखों को अस्थायी मानना क्योंकि यह सब झूठ का पसारा है।

(घ) धन-दौलत को स्वप्न की तरह समझकर इसका अहंकार न करना।

3. जगत रचना

गुरु साहिबान ने गुरबाणी में इस जगत को 'सच्चे की कोठड़ी' कहा है, जिसमें अकाल पुरख का निवास है।[36] लेकिन परमात्मा से टूटे हुए मायावी बुद्धि वालों के लिए यह जगत 'कूड़ सभु संसारु' (छलावा और भ्रम) है। श्री गुरु तेग बहादर जी ने माया में डूबे मानव मन को परमात्मा से जोड़ने के लिए बार-बार संसार की नश्वरता को प्रस्तुत किया है। जगत की नश्वरता दर्शाने के लिए उन्होंने जगत रचना के निम्नलिखित अलंकृत रूप प्रस्तुत किए हैं:

(क) बादल की छाया:

जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥
जन नानक जगु जानिओ मिथिया रहिओ राम सरनाई ॥२॥२॥[37]

माइआ को संगु तियागु प्रभ जू की शरणि लागु ॥ जगत सुख मानु मिथिया झूठो सभ साजु है ॥१॥ रहाउ ॥ सुपने जिउ धनु पछानु काहे परि करत मानु ॥

-शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 1352.

[36] इहु जगु सचै की है कोठरी सचे का विचि वासु ॥ -वही, अंग 463.

[37] वही, अंग 219.

(ख) स्वप्न की तरह अस्थिर:

रे नर इह साची जीअ धारि ॥

सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥१॥ रहाउ ॥[38]

जिउ सुपना अरु पेखना अैसे जग कउ जानि ॥

इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥२३॥[39]

(ग) पानी का बुलबुला:

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥

जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥२५॥[40]

(घ) बालू की दीवार:

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥

कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥४९॥[41]

(ङ) मृग तृष्णा:

म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥[42]

उपरोक्त अलंकार संसार की क्षणभंगुरता को दर्शाते हैं, जिससे जगत की अस्थिरता का पहलू सामने आता है। श्री गुरु तेग बहादर जी ने अस्थिर संसार में तीन चीजों का सदैवकालीन अस्तित्व माना है- परमात्मा का नाम, इसे जपने वाले साधु और नाम जपने की विधि बताने वाले गुरु:

---

[38] शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 633.

[39] वही, अंग 1427.

[40] वही, अंग 1427.

[41] वही, अंग 1429.

[42] वही, अंग 536.

नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥
कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंतु ॥५६॥[43]

4. नाम

'नाम' श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी का आधारभूत विषय है। इस संबंध में पहले भी उल्लेख किया जा चुका है कि श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को मोह-माया से मुक्त कर परमात्मा के नाम से जोड़ना है, जिसके माध्यम से मानव जीवन की सफलता संभव है। उनकी बाणी में नाम के निम्नलिखित पहलू सामने आते हैं:

4.1 नाम जपने वाला मनुष्य ही सुखी होता है

संसार में केवल परमात्मा का नाम जपने वाला मनुष्य ही सुखी होता है। ऐसे मनुष्य के अलावा समस्त संसार माया के मोह में पड़कर जीवन के मुख्य उद्देश्य से दूर हो जाता है:

कहु नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन गावै ॥
अउर सगल जगु माइआ मोहिआ निरभै पदु नही पावै ॥३॥८॥[44]

4.2 नाम-स्मरण: जीवन मुक्ति का मार्ग

अमूल्य मानव जीवन को सफल करने के लिए यह आवश्यक है कि परमात्मा के गुणों का गायन किया जाए। जिस परमात्मा के नाम-स्मरण से सारे दुख-संकट खत्म हो जाते हैं और जो जीवन मुक्ति का मार्ग है, मनुष्य को

[43] शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 1429.
[44] वही, अंग 220.

विषय-विकार छोड़कर उसका नाम स्मरण करना चाहिए।[45]

4.3 नाम-स्मरण द्वारा शरणागत और पतित मनुष्यों का उद्धार

श्री गुरु तेग बहादर जी ने परमात्मा के नाम को पापी मनुष्यों और इसका स्मरण करने वाले शरणागत मनुष्यों का उद्धार करने वाला बताया है। इस संबंध में उन्होंने पौराणिक पात्रों- गणिका, ध्रुव, गज, अजामल आदि के नाम-स्मरण के माध्यम से उद्धार होने के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मनुष्य को नाम-स्मरण की प्रेरणा दी है।[46]

परमात्मा का नाम पतित मनुष्यों का उद्धार करने वाला, भय दूर करने वाला और अनाथों का नाथ है, जो हमेशा मनुष्य के साथ रहता है:

पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥

---

[45] साधो गोबिंद के गुन गावउ ॥
मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ ॥१॥ रहाउ ॥
पतित पुनीत दीन बंध हरि शरणि ताहि तुम आवउ ॥
गज को त्रासु मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावउ ॥१॥
तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावउ ॥
नानक कहत मुक्ति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावऊ ॥२॥५॥
-शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 219.

[46] मन रे प्रभ की शरण विचारो ॥
जिह सिमरत गनिका सी उधरी ता को जसु उर धारो ॥१॥ रहाउ ॥
अटल भइओ ध्रुअ जा कै सिमरनि अरु निरभै पदु पाइया ॥
दुख हरता इह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइया ॥१॥
जब ही शरणि गही किरपा निधि गज गराह ते छूटा ॥
महमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बंधन तिह तूटा ॥२॥
अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ॥
नानक कहत चेत चिंतामणि तै भी उतरहि पारा ॥३॥४॥ -वही, अंग 632.

कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥६॥[47]

4.4 नाम के बिना मानव जीवन की व्यर्थता

नाम से रहित जीवन वाला मनुष्य का समस्त जीवन नाम की अनुपस्थिति के कारण व्यर्थ चला जाता है:

जा मै भजनु राम को नाही ॥
तिह नर जनमु अकारथु खोइआ यह राखहु मन माही ॥१॥[48]

इसलिए श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी में बार-बार नाम-स्मरण की ताकीद की गई है क्योंकि मानव जीवन का कीमती अवसर व्यर्थ बीतता चला जाता है।[49] तिलंग राग के निम्न शब्द के माध्यम से गुरु साहिब जी ने मनुष्य को उसके जीवन के पल-पल बीत जाने का उल्लेख करते हुए मोह-माया के झूठे लालचों को त्यागकर नाम-स्मरण की ताकीद की है:

चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥
छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥१॥ रहाउ ॥
हरि गुन काहि न गावही मूरख अगियाना ॥
झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१॥
अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥
कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥२॥१॥[50]

---

[47] शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 1426.

[48] वही, अंग 831.

[49] हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो ॥
अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो ॥ -वही, अंग 727.

[50] वही, अंग 726.

4.5 नाम के मुकाबले धार्मिक कर्मों की निरर्थकता

नाम-स्मरण के बिना मनुष्य द्वारा किए गए तीर्थ, व्रत, योग साधना, यज्ञ आदि धार्मिक कर्म निरर्थक हो जाते हैं।[51] अकाल पुरख के नाम के बिना ऐसे धार्मिक कर्म, पानी में पड़े पत्थर की तरह हैं, जिस पर पानी का कोई असर नहीं होता:

जैसे पाहन जल महि राखिओ भेदै नाहि तिह पानी ॥
तैसे ही तुम ताहि पछानहु भगति हीन जो प्रानी ॥२॥[52]

4.6 नाम-स्मरण का महत्व

परमात्मा का नाम-स्मरण करने से मनुष्य की खोटी बुद्धि का नाश हो जाता है और जन्मों के पापों से मुक्ति के माध्यम से निर्वाण की प्राप्ति होती है:

रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥
जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना ॥१॥[53]

नाम-रूप धन की प्राप्ति के बाद मानव मन की भटकन समाप्त होकर स्थिरता आ जाती है और शरीर से मोह-माया का नाश होकर निर्मल ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। मोह-माया उस मनुष्य पर असर नहीं करती, अनेकों जन्मों के संशय समाप्त हो जाते हैं और आत्मिक सुख प्राप्त हो जाता है।[54]

---

[51] कहा भइओ तीरथ ब्रत कीए राम सरनि नहि आवै ॥
जोग जग निहफल तिह मानउ जो प्रभ जसु बिसरावै ॥१॥
-शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 830-31.

[52] वही, अंग 831.

[53] वही, अंग 901.

[54] माई मै धनु पाइयो हरि नामु ॥ मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥१॥

4.7 नाम के मुकाबले सांसारिक रिश्तों और पदार्थों की अस्थिरता

जिन सांसारिक रिश्तों और पदार्थों (शरीर, पत्नी, घर-बार आदि) के मोह में पड़कर मनुष्य परमात्मा के नाम को भूल जाता है, वे सभी धुएँ के पहाड़ की तरह अस्थिर हैं, जो अंत समय में मनुष्य का साथ नहीं देते । केवल परमात्मा का नाम ही मनुष्य का सदा साथ देता है।[55]

यह सारा संसार सुख में ही मनुष्य का साथ देता है, दुख में कोई भी मनुष्य का साथी नहीं होता । इसलिए मनुष्य को सदा साथ देने वाले परमात्मा के नाम का स्मरण करना चाहिए:

सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥
कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥३२॥[56]

4.8 नाम कौन जपता है?

इस सवाल के जवाब को श्री गुरु तेग बहादर जी ने परमात्मा की कृपा से जोड़ा है । जिस मनुष्य पर परमात्मा दयालु होता है, वही मनुष्य

रहाउ ॥ माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥
लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ॥१॥
जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइया ॥
त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइया ॥२॥
-शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 1186.

[55] मन कहा बिसारिओ राम नामु ॥ तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ॥१॥ रहाउ ॥
इहु जगु धूए का पहार ॥ तै साचा मानिया किह बिचारि ॥१॥
धनु दारा संपति ग्रेह ॥ कछु संगि न चालै समझ लेह ॥२॥
इक भगति नाराइन होइ संगि ॥ कहु नानक भजु तिह एक रंगि ॥३॥४॥
-वही, अंग 1186 -87.

[56] वही, अंग 1428.

उसके गुण गाता है। ऐसी नाम रूपी दौलत की प्राप्ति कोई गुरमुख व्यक्ति ही करता है:

जा कउ होत दइआलु किरपा निधि सो गोबिंद गुन गावै ॥
कहु नानक इह बिधि की संपै कोऊ गुरमुखि पावै ॥३॥३॥[57]

4.9 नाम जपने का ढंग

नाम जपने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य अपने मन को विषय-विकारों से हटाकर नाम-स्मरण में एकाग्र करे। इस संबंध में गुरु साहिब जी ने दो दृष्टांत प्रस्तुत किए हैं, जिनकी एकाग्रता की तरह मनुष्य को नाम-स्मरण में एकाग्रता धारण करने की प्रेरणा दी है। ये दो दृष्टांत हैं:

(क) मछली:

गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥
कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥१॥[58]

(ख) कुत्ता:

सुआमी को ग्रिहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥
नानक इह बिधि हरि भजउ इक मनि हुइ इक चिति ॥४५॥[59]

4.10 मनुष्य द्वारा नाम-स्मरण न करने का कारण

जब मनुष्य संसार और सांसारिक रिश्तों-पदार्थों को ही वास्तविक मानकर इनकी मोह-माया में डूब जाता है, तब वह परमात्मा के नाम को भूल

---

[57] शब्दार्थ श्री ग्रंथ साहिब, अंग 1186.

[58] वही, अंग 1426.

[59] वही, अंग 1428.

जाता है। श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी में अनेकों बार मनुष्य को इस मोह का त्याग करके नाम से जुड़ने की प्रेरणा दी है। यह संसार की ही मोह-माया है, जिसमें अंधा हुआ मनुष्य परमात्मा का नाम-स्मरण नहीं करता:

प्रानी रामु न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥
कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि जम फंध ॥३१॥[60]

4.11 नाम से रहित मनुष्य की हालत

नाम से रहित मनुष्य के शरीर को गुरु साहिब जी ने सुअर और कुत्ते का दर्जा दिया है, जो इनकी तरह हमेशा विषय-विकारों के गंद में लिप्त रहते हैं:

एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥
जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥४४॥[61]

मोह-माया में लिप्त ऐसे मनुष्य का जीवन किसी काम का नहीं, जो परमात्मा का भजन नहीं करता:

मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिंद नामु ॥
कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥३०॥[62]

5. मुक्ति: जीवन मुक्त मनुष्य की अवस्था का स्वरूप

मुक्ति का अर्थ है- छूटा हुआ, स्वतंत्र, निर्बंधा[63] वैदिक धर्म में मुक्ति

---

[60] शब्दार्थ श्री ग्रंथ साहिब, अंग 1428.

[61] वही।

[62] वही।

[63] गुरुशब्द रत्नाकर महान कोष, पृष्ठ 843.

का अर्थ जन्म-मरण की मुक्ति से लिया जाता है, जिसकी प्राप्ति शरीर त्यागने के बाद हो सकती है। बौद्ध धर्म में मुक्ति का संदर्भ दुखों की निवृत्ति से जुड़ा है। जैन धर्म में आत्मा को बंधनों से मुक्त करने पर जोर दिया गया है। सिक्ख धर्म में मनुष्य के मरने के बाद वाली मुक्ति को स्वीकार नहीं किया गया। गुरबाणी में शारीरिक अस्तित्व वाली जीवित अवस्था के दौरान ही विषय-विकारों से मुक्त होने की बात की गई है, जिसे 'जीवन मुक्त' की सम अवस्था का नाम दिया गया है।[64] श्री गुरु तेग बहादर जी ने भी अपनी बाणी में मुक्ति के संदर्भ में जीवन मुक्ति का संकल्प प्रस्तुत किया है। यह मुक्ति मनुष्य को सम अवस्था का धारक बनाती है। गुरु साहिब जी ने सोरठि, धनासरी और गउड़ी राग के शब्दों और अपने सलोकों (श्लोकों) में जीवन मुक्त की अवस्था को चित्रित किया है। इस उच्च अवस्था में मनुष्य निम्नलिखित गुणों का धारक हो जाता है[65]:

(क) सांसारिक दुख की स्थिति में दुख को महसूस नहीं करता।

---

[64] प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥ जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥ सदा अनंदु तह नही बियोगु ॥
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥ तैसा अम्रितु तैसी बिखु खाटी ॥
तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥ तैसा रंकु तैसा राजानु ॥
जो वरताए साई जुगति ॥ नानक ओहु पुरखु कहीए जीवन मुक्ति ॥७॥
- शब्दार्थ श्री ग्रंथ साहिब, अंग 275.

[65] जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नहीं जा कै कंचन माटी मानै ॥१॥ रहाउ ॥
नह निंदिया नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै निआरउ नाही मान अपमाना ॥१॥
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहम निवासा ॥२॥ -वही, अंग 633.

(ख) सुखों के साथ मोह नहीं रखता। हर प्रकार के भय से मुक्त होता है और सोने-मिट्टी के एक समान समझता है।

(ग) किसी अन्य मनुष्य की निंदा, चुगली और चापलूसी नहीं करता। उसके अंदर न लोभ होता है, न मोह और न अहंकार।

(घ) खुशी-गमी, आदर-निरादर से निर्लिप्त रहता है।

(ङ) दुनियावी आशाओं और उम्मीदों का त्याग करके जगत से निर्लिप्त रहता है।

(च) विषय-विकार उस पर प्रभाव नहीं डाल सकते।

यह अवस्था पूर्ण गुरु की कृपा के माध्यम से ही प्राप्त होती है[66] और करोड़ों मनुष्यों में से कोई विरला मनुष्य ही इस अवस्था का धारक होता है।[67]

6. वैराग/बैराग

वैराग के सैद्धांतिक अर्थ हैं- निर्लिप्तता, उदासीनता, निर्मोहता, उपरामता, निःइच्छता आदि। गुरबाणी में वैराग शब्द को बैराग, बैरागु, बैरागि आदि रूपों में प्रयोग किया गया है, जो सैद्धांतिक रूप से भारतीय परंपरा में प्रचलित वैराग के रूप से बिल्कुल भिन्न है। भारतीय परंपरा का वैराग मनुष्य को घर-परिवार आदि का पूर्ण त्याग करवा कर निजी मुक्ति के उद्देश्य से जोड़ता है, जबकि गुरबाणी का वैराग मनुष्य को संसार में 'हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ' के रूप में ही इसके पदार्थक मोह से निर्लिप्त करवाकर जीवन मुक्त की अवस्था का धारक बनाता है और निजी मुक्ति की

---

[66] गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥३॥११॥ -वही, अंग 633.

[67] कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥२४॥ -वही, अंग 1427.

जगह 'सरबत का भला' (समस्त विश्व की भलाई) वाली भावना पैदा करता है।

श्री गुरु तेग बहादर जी ने मनुष्य को विषय-विकारों का त्याग करके सांसारिक मोह के प्रति वैराग धारण करने का उपदेश दिया है। ऐसा वैराग धारण करने वाले को उन्होंने अच्छे भाग्य वाला कहा है:

जिहि बिखिआ सगली तजी लीयो भेख बैराग ॥
कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥१७॥[68]

गुरु साहिब जी की बाणी में मुख्य रूप से तीन प्रकार का वैराग सामने आता है, जो नश्वरता वाले रूप के माध्यम से प्रकट होता है। वैराग के ये तीन रूप इस प्रकार हैं:

(क) संसार और सांसारिक पदार्थों की क्षणभंगुरता से उत्पन्न होने वाला वैराग:

इहु जगु धूए का पहार ॥ तै साचा मानिआ किह बिचारि ॥१॥
धनु दारा संपति ग्रेह ॥ कछु संगि न चालै समझ लेह ॥२॥[69]
धनु धरनी अरु संपति सगरी जो मानिओ अपनाई ॥
तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ॥१॥[70]

(ख) सांसारिक रिश्तों की बेवफाई और स्वार्थ से उत्पन्न होने वाला वैराग:

इह जगि मीतु न देखिओ कोई ॥
सगल जगतु अपनै सुखि लागियो दुख मै संगि न होई ॥१॥ रहाउ ॥
दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे ॥

---

[68] शब्दार्थ श्री ग्रंथ साहिब, अंग 1427.

[69] वही, अंग 1186-87.

[70] वही, अंग 1231.

जब ही निरधन देखिओ नर कउ संगु छाडि सभ भागे ॥१॥[71]

(ग) धार्मिक कर्मों की निरर्थकता से उत्पन्न होने वाला वैराग:

तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को ॥
निहफल धरमु ताहि तुम मानहु साचु कहत मै या कउ ॥१॥
जैसे पाहन जल महि राखिओ भेदै नाहि तिह पानी ॥
तैसे ही तुम ताहि पछानहु भगति हीन जो प्रानी ॥२॥[72]

7. विषय-विकार

विषय-विकार मनुष्य की ऐसी प्रवृत्ति का नाम है, जो उसे परमात्मा से दूर कर आध्यात्मिक मार्ग से भटका देती है। इस प्रवृत्ति में पांच विकार और वे सभी तामसिक प्रवृत्तियाँ शामिल हैं, जिनमें निजी स्वार्थ और दूसरों की बुराई या नुकसान का भाव होता है, जैसे पराई निंदा, चुगली, ईर्ष्या, चोरी, ठगी आदि।

श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी में जगह-जगह मनुष्य को विषय-विकारों और मोह-माया से दूर होकर परमात्मा के नाम-स्मरण की ताकीद की है। उदाहरण के लिए, सारंग राग के एक शब्द में गुरु साहिब जी ने विषय-विकारों में लिप्त ऐसे मनमुख की तस्वीर प्रस्तुत की है, जिसने कभी मन से परमात्मा के गुण नहीं गाए और वह दिन-रात विषय-विकारों में मग्न रहते हुए, गुरु-उपदेश न सुनकर, पराई स्त्री, पराई निंदा आदि के माध्यम से अपना जन्म व्यर्थ गँवा लेता है।[73]

---

[71] शब्दार्थ श्री ग्रंथ साहिब, अंग 633.

[72] वही, अंग 831.

[73] मन करि कबहू न हरि गुन गाइयो ॥

लोभ में फँसे हुए मनुष्य को एक कुत्ते की संज्ञा दी गई है, जो कुत्ते की तरह दर-दर भटकता है और उसे नाम-स्मरण की समझ नहीं रहती।[74]

मनुष्य की अहंकारी प्रवृत्ति को गुरु साहिब जी ने नश्वरता के पहलू के माध्यम से दूर करने की प्रेरणा दी है, क्योंकि नाशवान वस्तुओं का अहंकार करना व्यर्थ है, चाहे वह शरीर का हो, धन-संपत्ति, परिवार या धार्मिक कर्मों का अहंकार हो। इस संबंध में कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

(क) मानव शरीर की नश्वरता:

गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥[75]

(ख) परिवार और सांसारिक रिश्तों-नातों की नश्वरता:

जो तनु तै अपनो करि मानिओ अरु सुंदर ग्रिह नारी ॥
इन मै कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥१॥[76]

(ग) सांसारिक वस्तुओं का अहंकार:

झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥
इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥४१॥[77]

बिखियासकत रहिओ निसि बासुर कीनो अपनो भाइयो ॥१॥ रहाउ ॥
गुर उपदेसु सुनिओ नहि काननि पर दारा लपटाइयो ॥
पर निंदा कारनि बहु धावत समझिओ नह समझाइयो ॥१॥
कहा कहउ मै अपुनी करनी जिह बिधि जनमु गवाइयो ॥
कहि नानक सभ अउगन मो महि राखि लेहु सरनाइयो ॥२॥४॥३॥१३॥१३९॥४॥
१५९॥ -शब्दार्थ श्री ग्रंथ साहिब, अंग 1231-32.

[74] लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की ॥१॥ रहाउ ॥
...दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥ - वही, अंग 411.

[75] वही, अंग 1428.

[76] वही, अंग 200.

(घ) धार्मिक कर्म और अहंकार:

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥

नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥४६॥[78]

(ङ) धन-संपत्ति की नश्वरता:

कां को तनु धनु संपति कां की का सिउ नेहु लगाही ॥

जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाही ॥१॥ [79]

8. माया

माया को धार्मिक चिंतन में एक ऐसे तत्व के रूप में स्वीकार किया गया है, जिसके प्रभाव में जीव, सांसारिक मोह में पड़कर उस परम सत्ता से दूर हो जाता है। माया का अर्थ है भ्रम या भुलावा, जिसका अस्तित्व तो महसूस होता है, लेकिन वास्तव में उसकी अनुपस्थिति होती है। धर्म के दार्शनिक क्षेत्र में माया का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया जाता है। प्रचलित रूप में रुपये-पैसे को माया के अर्थों में भी प्रयोग किया जाता है और हिन्दू धर्म में विष्णु भगवान की पत्नी का भी एक नाम माया है। संबंधित प्रसंग में 'माया' शब्द, भ्रम या छलावे के अर्थों में प्रयोग किया गया है। *गुरबाणी में माया को प्रभु की शक्ति, भ्रम, अविद्या, अज्ञानता, पांच कामादिक (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) के अलावा नैतिक और भौतिक अर्थों में भी प्रयोग किया गया है, जिसे विद्वानों ने आगे रचनात्मक शक्ति, विषय-वासना, विषय-विकार,*

---

[77] शब्दार्थ श्री ग्रंथ साहिब, अंग 1428.

[78] वही, अंग 1428.

[79] वही, अंग 1231.

धन, दारा (पत्नी), संपत्ति, जगत प्रपंच, सांसारिक सुख, तृष्णा, जाल आदि रूपों में वर्णन करने का प्रयास किया है।[80]

गुरबाणी के अनुसार, हर वह वस्तु माया है, जो जीव को परमात्मा का नाम भुला कर दूसरी ओर ले जाती है।[81] यह जंगल की आग और बादल की छाया की तरह एक छलावा है, जो परमात्मा के नाम के बिना बाढ़ के पानी की तरह है।[82] श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी में माया के संबंध में मुख्य रूप से निम्नलिखित बिंदु दृष्टिगोचर होते हैं:

8.1 माया के प्रभाव में मनुष्य की दशा[83]

(क) दिन-रात माया में मग्न रहने के कारण मन में परमात्मा की याद नहीं आती।

(ख) पुत्र, मित्र, परिवार आदि की ममता में बँधा रहता है।

(ग) मृग तृष्णा जैसे संसार को सत्य मानकर मोह रखता है।

---

[80] सिक्ख अधिअैन (पंजाबी), बलकार सिंह, डा. (संपा.), पृष्ठ 89.

[81] इह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइया ॥
-शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 921.

[82] माई माइआ छलु ॥
त्रिण की अगनि मेघ की छाइआ गोबिंद भजन बिनु हड़ का जलु ॥ रहाउ ॥
-वही, अंग 717.

[83] प्राणी कउ हरि जसु मनि नही आवै ॥
अहिनिसि मगनु रहै माइआ मै कहु कैसे गुन गावै ॥१॥ रहाउ ॥
पूत मीत माइआ ममता सिउ इह बिधि आपु बंधावै ॥
म्रिग त्रिसना जिउ झूठो इहु जग देखि तासि उठि धावै ॥१॥
भुगति मुकति का कारणु सुआमी मूड़ ताहि बिसरावै ॥
जन नानक कोटन मै कोऊ भजनु राम को पावै ॥२॥३॥ -वही, अंग 219.

(घ) मुक्ति देने वाले परमात्मा को भूल जाता है।

8.2 माया का पसारा कौन करता है?

मनुष्यों को भ्रम में डालने वाली माया का पसारा परमात्मा स्वयं अनेक रूप धारकर करता है, लेकिन वह स्वयं इस सारे पसारे से निर्लिप्त रहता है:

अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखनहारा ॥
नाना रूपु धरे बहु रंगी सभ ते रहै निआरा ॥२॥[84]

8.3 माया के अधीन संसार की हालत

माया के प्रभाव में लगभग समस्त संसार ही परमात्मा के स्मरण को छोड़कर माया के भ्रम में पड़ा हुआ है। घर-परिवार, रिश्ते-नाते आदि के मोह में मग्न होकर, सांसारिक पदार्थों के अहंकार में यह समस्त संसार, पागलों की तरह दिन-रात माया के प्रभाव में भटकता रहता है।[85] कोई विरला मनुष्य ही माया का मोह त्यागकर अकाल पुरख का स्मरण करता है:

निसि दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥

---

[84] शब्दार्थ श्री ग्रंथ साहिब, अंग 537.

[85] साधो इहु जगु भरम भुलाना ॥
राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥ १॥ रहाउ ॥
मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि लपटाना ॥
जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना ॥१॥
दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ मनु न लगाना॥
जन नानक कोटन मै किनहू गुरमुखि होइ पछाना॥२॥२॥-वही, अंग 684-85.

कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥२४॥ [86]

8.4 माया का प्रभाव क्षेत्र और इससे बचने का ढंग

माया का प्रभाव क्षेत्र केवल कुछ गिने-चुने जीवों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बड़े-बड़े योगी, जंगम, सन्यासियों आदि को भी अपने प्रभाव में ले लेती है। परमात्मा के नाम का स्मरण ही माया से बचने का एकमात्र उपाय है:

जोगी जंगम अरु सनिआस ॥ सभ ही परि डारी इह फास ॥१॥
जिहि जिहि हरि को नामु समारि ॥ ते भव सागर उतरे पारि ॥२॥[87]

9. मन

गुरबाणी में मन को पांच तत्वों की रचना माना गया है[88] जो माया के प्रभाव में सब कुछ जानते हुए भी अवगुण करता है।[89] मन को जीतने वाला संसार का विजेता बन जाता है।[90] डॉ. जोध सिंह के अनुसार, मन एक आंतरिक सूक्ष्म इंद्री है, जो अन्य इंद्रियों से भिन्न है, लेकिन फिर भी हमेशा किसी इंद्री के साथ मौजूद होकर अहंकार और माया के माध्यम से बुद्धि को बाहरी बिम्बों से परिचित करवाती है।[91] श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी में मन के संबंध में निम्नलिखित पहलू प्रस्तुत होते हैं:

---

[86] शब्दार्थ श्री ग्रंथ साहिब, अंग 1427.

[87] वही, अंग 1186.

[88] इहु मनु पंच ततु ते जनमा ॥ -वही, अंग 415.

[89] कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगनु करै ॥
काहे की कुसलात हाथि दीपु कूए परै ॥२१६॥ -वही, अंग 1376.

[90] ...मनि जीतै जगु जीत ॥ -वही, अंग 6.

[91] जोध सिंह (डॉ), सिक्ख सिद्धांत: सरूप ते समरत्था, पृष्ठ 122.

9.1 मन का स्वरूप

मन को काबू करना कठिन कार्य है क्योंकि इसमें चंचल रूप वाली तृष्णा का वास होता है। मन में निवास करने वाला कठोर रूप वाला क्रोध मनुष्य की सुध-बुध भुलाकर सारा ज्ञान नष्ट कर देता है।[92] मनुष्य के साथ न निभने वाले सांसारिक पदार्थों की चाहत और सांसारिक रिश्तों के मोह के साथ इस मन की हालत पागलों जैसी हो जाती है और मानव जन्म व्यर्थ चला जाता है।[93]

9.2 मन की प्रवृत्ति

(क) मोह-माया में भटका हुआ मन धर्म की बातें सुनकर भी परमात्मा के गुण नहीं गाता।[94]

---

[92] साधो इहु मनु गहिओ न जाई ॥
चंचल त्रिसना संगि बसतु है या ते थिरु न रहाई ॥१॥ रहाउ ॥
कठन क्रोध घट ही के भीतरि जिह सुधि सभ बिसराई ॥
रतनु गियानु सभ को हिरि लीना ता सिउ कछु न बसाई ॥२॥
-शब्दार्थ गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 122.

[93] मन रे कहा भइओ तै बउरा ॥
अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि हउरा ॥१॥ रहाउ ॥
जो तनु तै अपनो करि मानिओ अरु सुंदर ग्रिह नारी ॥
इन मै कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥१॥
रतन जनमु अपनो तै हारिओ गोबिंद गति नहीं जानी ॥
निमख न लीन भइओ चरनन सिउ बिरथा अउध सिरानी ॥२॥ -वही, अंग 220.

[94] कोऊ माई भूलिओ मनु समझावै ॥
बेद पुरान साध मग सुनि करि निमख न हरि गुन गावै ॥१॥ -वही, अंग 219-20.

(ख) विषय-विकारों के अधीन दुर्लभ मानव जन्म को व्यर्थ खो देता है।[95]

(ग) नाम-स्मरण की जगह माया के मोह के साथ प्रेम पैदा करता है।[96]

(घ) प्रत्येक जीव के अंदर और बाहर अर्थात संसार में निवास करने वाले परमात्मा के साथ प्रेम नहीं रखता।[97]

(ङ) माया के साथ जुड़कर उसके मोह में मन इस प्रकार फँस जाता है, जैसे दीवार पर बनाया गया चित्र, दीवार को नहीं छोड़ता।[98]

(च) कुत्ते की पूँछ की तरह यह मन कभी भी सीधा नहीं होता और किसी की दी हुई अच्छी शिक्षा को ध्यान से नहीं सुनता।[99]

(छ) दिन-रात बेकाबू होकर विषय-विकारों की ओर भागता है, जिसे रोकना बहुत कठिन है।[100]

समस्त अध्ययन के बाद हम कह सकते हैं कि श्री गुरु तेग बहादर जी की पावण बाणी मनुष्य को सांसारिक पदार्थक मोह से सावधान करके, सदैवकालीन एवं स्थायी साथी- परमात्मा के नाम से जोड़ती है। इसके

---

[95] दुरलभ देह पाइ मानस की बिरथा जनमु सिरावै ॥
-शब्दार्थ गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 220.

[96] माइआ मोह महा संकट बन ता सिऊ रुच उपजावै ॥ -वही, अंग 220.

[97] अंतरि बाहरि सदा संगि प्रभु ता सिउ नेहु न लावै ॥१॥ -वही, अंग 220.

[98] मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत ॥
नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीति ॥३७॥ -वही, अंग 1428.

[99] सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान धरै ॥ -वही, अंग 536.

[100] माई मनु मेरो बसि नाहि ॥
निस बासुर बिखियन कउ धावत किहि बिधि रोकउ ताहि ॥१॥ -वही, अंग 632.

प्रकटीकरण के लिए मनुष्य को अकाल पुरख की कृपा, संसार की नश्वरता, सांसारिक रिश्तों-नातों की अस्थिरता, मन, माया और विषय-विकारों के अधीन मनुष्य की दशा, सांसारिक मोह-माया से ऊपर उठने वाले गुरमुख की जीवन मुक्त अवस्था आदि पहलुओं के माध्यम से समझाया गया है। गुरु साहिब जी की बाणी में दर्शाया गया नश्वरता का पहलू मनुष्य को भौतिकवादी नहीं बनाता, बल्कि 'भै काहू कउ देति नहि नहि भै मानत आन' वाले पूर्ण मनुष्य की सृजना करता है। आज के समय में विषय-विकारों के अधीन भटक रहे संसार के लिए श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी की प्रासंगिकता और सार्थकता विशेष रूप से प्रकट होती है।

*****

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज श्री गुरु तेग बहादर जी की पवित्र बाणी का विवरण

राग	शब्द	अंग (पृष्ठ)
गउड़ी	9	219-220
आसा	1	411
देवगंधारी	3	536
बिहागड़ा	1	537
सौरठि	12	631-634
धनासरी	4	684-685
जैतसरी	3	703
टोडी	1	718
तिलंग	3	726-727
बिलावल	3	830-831
रामकली	3	902
मारू	3	1008
बसंत	5	1186-1187
सारंग	4	1231-1232
जैजावंती	4	1352-1353
'सलोक वारां ते वधीक' में 'सलोक महला ९' के शीर्षक अधीन राग मुक्त बाणी	57 श्लोक	1426-1429

कुल बाणी: 116 (59 शब्द और 57 श्लोक)

गुरु तेग बहादर साहिब जी,
दे गए अमृत रूप गुरबाणी।
तन मन गुरु को सौंप कर,
पढ़ता जो भी प्राणी।
सारे काज संवरते हैं,
जीवन की जाती है बदल कहानी।
पावन चरणों की मौज में,
जिसने भी रमझ पहचानी।
नाम प्रभु का स्मरण करके,
वो बन गई रूह मस्तानी।
गुरमीत दनौली यह पावन गुरबाणी,
मूर्ख को बनाए ब्रह्म का ज्ञानी।

-गुरमीत सिंह दनौली

HARYANA SIKH GURDWARA MANAGEMENT COMMITTEE
ਹਰਿਆਣਾ ਸਿੱਖ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਕਮੇਟੀ